International Journal of Academic Research
ISSN: 2348-7666; Vol.10, Issue-2, April-June, 2023
Impact Factor: 6.023; email: drtvramana@yahoo.co.in

मध्य युगीन भारतीय शिक्षा-समीक्षा

डी.रघुरामप्रसाद, हिन्दी प्राध्यापक
सरकारी स्नातक महाविद्यालय, तिरुवूरु
चरवाणी संख्या: 9182750027

प्रस्तावना: 10 ई.वी से 18 ई.वी सदी के मध्य तक का समय भारत के इतिहास में मध्य युग के नाम से जाना जाता है | प्रस्तुत आलेख में इस काल में विद्यमान हिन्दू शिक्षा व्यवस्था का रेखामात्र उल्लेख तथा मुसलमान आक्रमणकारियों के आने से आए आमूलचूल परिवर्तनों की समीक्षा प्रस्तुत है| मध्य युगीन भारतीय शिक्षा के दो पहलू हैं-हिन्दू शिक्षा विधान और इस्लामिक शिक्षा विधान| हिन्दू शिक्षा व्यवस्था के स्थान पर प्रतिष्ठित, नवीकृत मुसलमान शिक्षा व्यवस्था, मुसलमान शासकों से स्थापित विविध शिक्षा-सँस्थाएँ और उन संस्थाओं को सुचारू रूप से चलाने प्रदत्त वित्त तथा नियुक्त विद्वान, गुरु-शिष्य का घनिष्ठ संबंध एवं धर्म प्रधान शिक्षा बोध, धर्म निरपेक्ष शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा और महिला-शिक्षा के प्रावधान व विद्यमान संस्थान, शिक्षरंभ के वय व उत्सव, गरीब और अनाथों की शिक्षा, प्रमुख शिक्षा केंद्र एवं शिक्षा का परम-प्रयोजन आदि वर्तमान नई शिक्षा नीति के परिप्रेक्ष्य में बहुत ही प्रासंगिक हैं | इसलिए समीक्षाधीन है|

हिन्दू शिक्षा व्यवस्था: मध्य युग में मुसलमान आक्रमणकारियों के आने से पहले भारत में उत्कृष्ट शिक्षा व्यवस्था उपस्थित थी, जो मोटे तौर पर हिन्दू धर्म पर निर्भर थी | ब्राह्मण पंडितों की देख-रेख में राष्ट्र के भरण-पोषण से वह चलती थी| बड़े-बड़े भवनों के बजाय वह ग्रामीण और शहरी पाठशालाओं में, मंदिरों के प्रांगणों में, घरों के बरामदों में, पेड़ों की छाँह में यह चलती थी| उसे पाने के लिए छात्र निर्धारित शुल्क की जगह अपने माता-पिता के दिए उपहार गुरुओं को देते थे या फिर उनकी सेवा- परिचर्या करते थे | (गुरु शुश्रूषया विद्या..)

हिन्दू शिक्षा के चरण: मुसलमान आक्रान्ताओं के आने से पहले उपस्थित हिन्दू शिक्षा के चार चरण थे-पहले चरण में अपने गुरु के मार्गदर्शन में शिष्य रेत पर संस्कृत वर्णमाला के अक्षर लिखते थे और सीखते थे | दूसरे चरण

में गुरु के द्वारा ताल-पत्रों पर लिखित अक्षरों के ऊपर लाल स्याही से या कोयले से बार-बार लिखकर शिष्य अभ्यास करते थे और सीखते थे | तीसरे चरण में लेखन और उच्चारण से संयुक्त, द्वित्व अक्षर ज्ञान प्राप्त करते थे, अतिरिक्त अभ्यास से व्यक्ति-नाम, शब्दों का प्रयोग व्याक्य में करके वाक्य-रचना का ज्ञान प्राप्त करते थे| लिखित और प्रचलित भाषा-भेद को जानते थे| माप-तौल के लिए आवश्यक अंक गणित सीखना तब अनिवार्य था | इसलिए वर्ग के सारे छात्र अंक गणित सूत्रों को सीखते थे और ऊँचे स्वर में गुणकार पहाडे दुहराकर ज़बानी याद करते थे, चौथे चरण में पन्नों पर लिखना सीखते थे| इस प्रकार प्राथमिक शिक्षा के दौरान 3Rs (**R**eading, w**R**iting & a**R**ithemetic) छात्रों को शिखाया जाता था | "साधारनतया एक गुरु से 4 से लेकर 7 तक शिष्य रहते थे | बड़े से बड़े विद्वान के यहाँ 10 से 15 शिष्य रहते थे और दस-बारह वर्ष तक वेद, पुराण व विविध शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त करते थे |"[1] पाठ्क्रम में साहित्य भी शामिल था मगर उसके प्रति रूचि नहीं जगाई गई थी | "काशी उस समय मुख्य शिक्षा केंद्र था, जहाँ पर शिक्षा प्राप्त करने के लिए देश के विविध प्रान्तों से बड़ी संख्या में लोग आते थे" [2]

मुसलमान शिक्षाव्यवस्था: 10 ई.वी में अरब से और मध्य एशिया से मुसलमान आक्रमणकारी भारत आए थे | उनके आगमन से राष्ट्र की मदद के अभाव से हिन्दू शिक्षा व्यवस्था करीब बंद हो गई थी | मुसलमान आक्रान्ताओं ने उत्तर भारत के राजाओं को हराकर अपना साम्राज्य स्थापित किया था | स्थानीय औरतों से शादी-ब्याह करके भारत में अपना घर बसाया था | धीरे-धीरे हिन्दू संस्कृति और सभ्यताओं के स्थान पर भारत में इस्लाम धर्म और संस्कृति को फैलाने के उद्देश्य से उन्होंने शिक्षा और साहित्य-सृजन को साधन बनाया था | सुल्तान, रईस और उनकी प्रभावशाली महिलाओं ने मदद-ई-माश देकर कई मदरसे खोलना शुरू किया था | विद्वानों को शिक्षा देकर उनको नागरिक सेवा के काबिल बनाना तथा उनसे न्यायपूर्वक अपना कर्तव्य पालन कराना इन मदरसों का अहम ध्येय था | अलाउद्दीन खिलजी के मंत्री शमसुल मालिक ने एक मदरसे का भरण-पोषण करके इस्लामी धर्मशास्त्र (फ़िक्ह),कोश

विद्या, टीका-लेखन आदि को बढ़ावा दिया था | सिकंदर लोढ़ी के समय में शिक्षा का बागडोर सँभालने के लिए विद्वानों को अरब, फ़ारस और मध्य एशिया से बुलाया जाता था धर्म के साथ-साथ तर्क व दर्शन को सिखाया जाता था | धर्म के अलावा अन्य बातों को शिक्षा में शामिल करने की इस प्रवृत्ति का पल्लवन मुग़ल बादशाह अकबर के समय में देखा जा सकता है उसने प्राथमिक शिक्षा-पाठ्यक्रम में कई परिवर्तन किए | तर्क, अंक गणित, नीति, क्षेत्रमिति, ज्यामिति, खगोलशास्त्र, मुख सामुद्रिक शास्त्र, कृषि विज्ञान और सार्वजनिक प्रशासन को अध्ययन के विषय बनाया था| संस्कृत के अध्ययन में व्याकरण, न्याय, वेदांत व पातंजल (योग सूत्र) सीखना अनिवार्य कर दिया था |

मध्य युगीन मुसलमान शिक्षा की विशेषताएँ :

1. शासकों का भरण-पोषण: मध्य युग में शिक्षा को फ़ैलाने में शासकों ने अपना योग दिया | उन्होंने शिक्षा-संस्थानों व विश्वविद्यालयों को स्थापित किया था | मदद-ई-माश देकर उन संस्थानों का भरण-पोषण किया था | उन्हें सुचारू रूप से चलाने के लिए विद्वानों का पोषण किया था|

2.राष्ट्र के नियंत्रण का अभाव: शासक शिक्षा के विषय में न तो कुछ दावा करते थे न ही संस्थाओं को चलाने में दखल देते थे|

3. शिक्षा पर धर्म का आधिपत्य: फ्रो.एस.एन एस.एन मुखर्जी के शब्दों में "समूचे शिक्षा-विधान धार्मिक आदर्शों से सराबोर था, जिन्होंने शिक्षा का लक्ष्य,अध्ययन-विषय और छात्रों के दैनिक जीवन को भी प्रभावित किया|"

4.गाँव शिक्षा केंद्र के रूप में: मोटे तौर पर गाँवों में शिक्षा-संस्थान फूलते-फलते रहे |

5.विविध विषयों केलिए प्रावधान: मध्य युग में शिक्षा प्रधान-रूप से धार्मिक थी फिर भी इसमें कई बौद्धिक विषय जैसे गणित, खगोल शास्त्र, व्याकरण, राजनीति शास्त्र, शामिल थी | कला और साहित्य के लिए प्रोत्साहन था |

6.आचरण के नियम: मध्य युग में मुसलमानों के शासनकाल में छात्रों का आचरण, चिंतन-विधान, व्यक्तित्व व शील-निर्माण के सुपरिभाषित नियमों पर काफी जोर दिया गया था |

7.अनुशासन: मुसलमानों के शासन काल में अपराधों के लिए सजाएँ सख्त थी | छुट्टी लिए बिना, विवरण दिए बिना स्कूल के लिए गैर हाज़िर छात्रों की हथेलियों पर बेंत से मारते थे, मुख पर थप्पड़ मारते थे | छात्रों को दबे पाँव खड़ा करके, उनकी जाँघों के नीचे से होकर आते हुए उनके हाथों से उनके कान पकड़ाने की विचित्र सजा उन दिनों में प्रचलित थी |

8. शिक्षक-शिष्य संबंध: जैसे ब्राह्मण या बौद्ध-काल में शिक्षक का सम्मान होता था वैसे ही मुसलमान शासन काल में भी शिक्षक को सम्मान दिया जाता था| यद्यपि शिक्षक के साथ शिष्य के रहने की प्रथा मुसलमानों में नहीं थी जो कि ब्राह्मण व बौद्ध कालों में आम बात थी, शिक्षक और शिष्य के बीच घनिष्ठ संबंध था |

9. विद्वावन शिक्षक: शिक्षा-व्यवसाय के प्रति प्रेम के कारण शिक्षक उसे अपनाते थे | उनकी बड़ी प्रतिष्ठा थी | प्रो.एस.एन. मुखर्जी के अनुसार "शिक्षा अपने आप में उपहार स्वरुप थी तथा मानव के सर्वोच्च विकास का चिह्न थी | वह परीक्षा की ज़रूरतों की वजह से कभी भी पंगु नहीं थी |"

10.शिक्षा संस्थानों के प्रकार: मुसलमानों के शासन काल में प्राथमिक शिक्षा 'मक्बतों' में और माध्यमिक व उच्च शिक्षा 'मदरसों' में दी जाती थी |

11.**मकबत**:प्राथमिक दशा में ही छात्रों में इस्लाम के बीज बोने के लिए मुसलमान शासकों ने कोने-कोने में मकबतों को स्थापित किया था | अरबी शब्द मकतब का अर्थ है- प्राथमिक शिक्षालय | उनमें चार वर्ष, चार मास, चार दिन की आयु प्राप्त बच्चों को प्रवेश मिलता था | शिक्षा का आरंभ सूचित करने 'बिस्मिल्लाह' उत्सव मनाया जाता था जो हिन्दू धर्म के उपनयन संस्कार की याद दिलाता था | पवित्र कुरान से 'सुराह-ऐ-इकरा' अध्याय का पाठ किया जाता था | मकबतों का भरण-पोषण का जिम्मा मुसलमान शासको से उठाया जाता था | उनको मस्जिदों से जोड़कर, चलाने का दायित्व मौलवियों को सौंप दिया जाता था | अनिवार्य रूप से अरबी, फारसी भाषाओं का ज्ञान, कुरान के उसूलों का ज्ञान पैगंबरों व मुसलमान फकीरों के अफसानें, लेखन व संप्रेषण कला-ज्ञान, सुन्दर लिखावट, पहाड़े, फिरदौसी की गुलिस्तान व बोस्टन कविताएँ, और इबादत-विधान आदि मकबत के छात्रों को सिखाया जाता था|

मौलवी अपने आदर्श चरित्र से छात्रों को प्रभावित करते थे | छात्रों से पितृवत प्यार करके, अनुशासन पर जोर देते थे | अपराधियों को दंड देकर सुधारने, आखिर छात्रों के भौतिक, भावनात्मक, नैतिक व बौद्धिक विकास में अपना योग देने का गुरुतर कर्तव्य मौलवियों के ऊपर था |

12.मदरसे: प्राथमिक शिक्षा के उपरान्त छात्रों को उच्च शिक्षा दिलाने के लिए मुसलमान शासकों ने मदरसों को स्थापित किया था | मदरसा शब्द का अर्थ है-पढाई-सिखाई की जगह | मदरसों को मदद-इ-माश (धर्म दाय) से चलाया जाता था | इनमें इस्लाम-धर्म की शिक्षा याने कुरान का अध्ययन, मुहम्मद और उसकी पारंपरिक भावनाओं, इस्लाम के उसूलों व ऐतिहासिक विषयों को फ़ारसी भाषा में सिखाया जाता था | धर्म निरपेक्ष शिक्षा के अंतर्गत इनमें अरबी साहित्य, व्याकरण, इतिहास, दर्शन, गणित, भूगोल,भूगोल शास्त्र, राजनीती शास्त्र, अर्थ शास्त्र, ललित कला, चित्रकारी, शिल्प, न्याय, अंक गणित,खगोल,कृषि,चिकित्सा, तर्क,वेदांत आदि छात्रों को सिखाया जाता था| कुल मिलकर 10 से 12 वर्ष तक छात्र इनसे धार्मिक व अन्य विषयों को सीखते थे | शहरों में शिक्षा-प्रसार का काम ग्रंथालयों व साहित्य-समाजो द्वारा उठाया जाता था | तब ऊँचे सरकारी ओहदे हासिल करने लिए अरबी व फ़ारसी भाषाओँ का संवर्धित ज्ञान पाना छात्रों के लिए अनिवार्य था और व्यावसायिक, तकनीकी शिक्षा का भी प्रावधान था| इलटूट मिश ने सर्वप्रथम दिल्ली में मुयुजुद्दीन-मुयुज्जी नामक मदरसा खोला सुल्तान नसरुद्दीनमुहम्मद के प्रधानमंत्री बालबन ने ने अपने मलिक के नाम पर मदरसा नासिरय्या की स्थापना की थी | मुहम्मद तुगलक के समय तक आते-आते महज दिल्ली में ही 1000 मदरसे थे |

13.शिक्षा-कक्षा:आमतौर पर दरख्तों की छाया शिक्षा-कक्षा का काम करती थी जहाँ पर छात्र पंक्ति बाँधकर ज़मीन पर बैठते थे जब कि शिक्षक मृगछाला पर आसीन होकर उनको पढाते थे |

14.छात्र-संख्या व बोध: तब मौलवी के नज़रबद्ध छात्रों की संख्या सीमित थी | इसलिए वे छात्रों के प्रति व्यक्तिगत श्रद्धा दिखाते थे और कनिष्ठ छात्रों को पढ़ाने में वरिष्ठ व अगुआ छात्रों की मदद लेते थे | जगह-जगह पर पाठ्यक्रम अलग था परन्तु वर्णमाला-बोध और कुरान का उद्गीथ और उसके कुछ अंशों की ज़बानी याद धार्मिक

विधियों के लिए अनिवार्य मानते थे | मौलवियों के मकबतों के अलावा संतो के खानकाहों (मस्जिदों से स्वतंत्र) में भी शिक्षा का काम जारी था |

15.शुल्क: आमतौर पर छात्रों को शिक्षा – शुल्क देना पड़ता था| मगर अनाथों और गरीबों को धर्म-दाय से निःशुल्क पढाया जाता था | छात्रावास की सुविधावाले मदरसों में ठहरने व खाने का प्रबंध किया जाता था | रईसज्यादे और साहबज्यादे अपने लिए नियुक्त शिक्षकों से घर पर ही शिक्षा ग्रहण करते थे| प्रमुख इस्लामिक दार्शनिक इबन सिना ने लिखा था-"अगर बच्चों को निजी शिक्षक के बजाय कक्षा में सिखाया जाए, तो वे बेहतर सीख सकते हैं|"[3] छात्रों में स्पर्धा, अनुकरण का महत्त्व, समूह चर्चा और वाद-प्रतिवाद की उपयोगिता को उसने इसके कारणों के रूप में उद्धृत किया |

16.व्यावसायिक शिक्षा: मध्य युग में मुसलमान-शासन काल में व्यावसायिक, तकनीकी और पेशेवर शिक्षा के लिए प्रावधान था | अकबर ने शिक्षा में काफी रूचि दिखाई थी | ऐन-ई-अकबरी के एक परिच्छेद से यह बात स्पष्ट होती है | पढने में रोचक इस परिच्छेद में शिक्षा-विधान,पाठ्यक्रम, पढाई-सिखाई के तरीकों के संबंध में महत्त्वपूर्ण समाचार मिलता है |

17.**महिला-शिक्षा**: मध्य युगीन मुसलमान शासन-काल में महिला शिक्षा अपवाद स्वरुप था | संपन्न परिवारों की लड़कियाँ कुरान के कथनों, पैगंबरी परम्पराओं और इस्लाम के नियमों व तत्संबंधी विषयों का अध्ययन घर पर ही करती थी और निश्चित उम्र तक ही करती थी|

प्रमुख शिक्षा केंद्र: मध्य युगीन मुसलमानों के शासनकाल में दिल्ली, आगरा, जौनपुर, बीदर, अजमेर आदि मध्य युग के प्रमुख शिक्षा केंद्र थे जहाँ अलग-अलग मुसलमान शासकों ने धर्म, साहित्य, कला, शास्त्र के संस्थान स्थापित किया था|

शिक्षा के लक्ष्य:

मुसलमानों के शासनकाल में शिक्षा का सब से महत्त्वपूर्ण लक्ष्य ज्ञान का विस्तार तथा इस्लाम धर्म का प्रचार था | इस काल में इस्लाम धर्म सूत्रों, नियमों व सामाजिक प्रचार शिक्क्षा का अंग था | धर्म–प्रचार, ज्ञान-विस्तार के अलावा भौतिक संपत्ति-प्रदान भी शिक्षा का प्रयोजन था| धर्म प्रचार के द्वारा छात्रों में इस्लाम धर्म और संस्कृति के

प्रति प्रेम बढ़ाना, उनको इस्लामिक जीवन के काबिल बनाना, उनका परलोक बनाना, व्यावसायिक शिक्षा के द्वारा उनका इहलोक बनाना, नैतिक और नागरिक शिक्षा के द्वारा उन्हें अनुशासन बद्ध और प्रशासन के लिए संसिद्ध करना तत्कालीन शिक्षा के अन्य लक्ष्य थे|

इसप्रकार मध्य युगीन शिक्षा मुसलमान आक्रमणकारियों के आने से पहले हिन्दू धर्मावलंबित थी| मुसलमानों के आने के बाद इस्लाम धर्मावलंबित हो गई थी | राष्ट्र के भरण-पोषण से और धर्मदाय की मदद से चलती यह शिक्षा मस्जिद से जुड़कर, इस्लाम को आत्मसात कर,मौलवियों की देख-रेख में आगे बढ़कर, कुरान के उसूलों और पैगंबरी परंपराओं व भावनाओं को उजागर कर 'दिन दुगनी रात चौगुनी' गति से अग्रसर होती थी | फ्रो.एस.एन एस.एन मुखर्जी के शब्दों में "समूचे शिक्षा-विधान धार्मिक आदर्शों से सराबोर था, जिन्होंने शिक्षा का लक्ष्य,अध्ययन-विषय और छात्रों के दैनिक जीवन को भी प्रभावित किया|"

सन्दर्भ ग्रन्थ

1.Education in Medieval India by Dr.Krishnalal Ray
Chapter IV "Hindu Education –Higher, Page No.67

2. Education in Medieval India by Dr.Krishnalal Ray
Chapter IV "Hindu Education –Higher, Page No.67

3.Ain-i-Akbari-Volume II (Jarrett, Page.158)